मासिक पत्रिका मई 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

शिक्षा और नैतिकता पर बौद्धिक चिन्तन: आधुनिक संदर्भ में

-आचार्य सोमेंद्र श्री, रिसर्च स्कॉलर दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत विषय की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा में नैतिकता के बिना मानवीय मूल्यों का ह्रास दिन प्रतिदिन दिखाई दे रहा है। शिक्षा का मात्र उद्देश्य रोज़ी-रोटी तथा व्यवसाय प्राप्त करना ही ना होकर बालक का सर्वांगीण विकास करना है। शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास से ही सर्वोन्नति संभव है शिक्षा का उद्देश्य है-**'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात विद्या वह है जो हमें सब प्रकार के दुखों से विमुक्ति दिलवाए। इसलिए ऋग्वेद का ऋषि कहता है- **'मनुर्भव'** मनुष्य बनो। मानवीय गुण प्रेम, दया, सहानुभूति, त्याग, सेवा, परस्पर सहयोग भावना, उत्तमोत्तम् आचरण शिक्षा, विद्या इत्यादि शुभ श्रेष्ठ गुणों द्वारा ही मनुष्य का निर्माण संभव है। इसी के द्वारा समाज एवं राष्ट्र को भी मंगलमय बनाया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक आदर्श है-**सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।** इस मंत्र में शिक्षा के पांच उद्देश्य बताये हैं शारीरिक विकास, जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति सबका विकास, धर्म संस्कृति सभ्यता के प्रति उदात्त भावना, द्वेश भावना के स्थान पर गुरु शिष्य का आपसी सहयोग। इसी उद्देश्य को सामने रखकर शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म शिक्षा के मूल तत्व है। यम और नियम के द्वारा भी समानता व एकरूपता की प्राप्ति की जा सकती है। वेद की उदात्त विचारधारा द्वारा विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, समष्टिभावना, भद्रभावना, आशावाद, निर्भयता, श्रद्धा, सामंजस्य को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक नैतिक रूप इस वाक्य में दिग्दर्शित किया गया है - **"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद"** जब उत्तम माता-पिता और आचार्यगण होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है।

अत:शक्तियों को समुचित रूप में विकसित कर देना ही शिक्षा का प्रथम एवं अंतिम ध्येय है। इसी आदर्श को हृदयंगम कर वैदिक ऋषि अपनी शक्तियों के विकास के लिए परमात्मा से प्रात: सायं इस प्रकार से प्रार्थना किया करते थे। ईश्वर! हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करो-**'धियो यो न: प्रचोदयात्'** हे अग्निदेव! हमें आप सद्मार्ग से विश्व में ले चलें, ले ही न चले, अपितु आप हमारे हृदयों से दुर्गुण एवं पाप भावनाओं को निकालकर निष्पाप तथा शुद्ध पवित्र बुद्धि प्रदान करें।

वैदिक शिक्षा का मूल आधार मानव की बुद्धि का परिष्कार कर सुपथ का दर्शन कराना था, वस्तुत: यही प्राचीन शिक्षा का ध्येय था। क्या आज की शिक्षा में कहीं भी इस प्रकार का पाठ्यक्रम निर्धारित है जो बुद्धि को मानवता के मार्ग का पथिक बना सके जिससे कि हम उच्च स्वर से आयु, प्राण, धन, तेज को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना न भूलें।

प्राचीन काल में **'सत्यम् शिवं सुंदरम्'** के अनुसार विश्व की कल्याण कामना ही वैदिक संस्कृति का प्रयोजन था। उसकी सिद्धि के लिए ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति करते हुए ब्रह्म के स्वरूप में भारतीय निमग्न हो जाते थे। तप की कसौटी के रूप में यम नियमों का पालन करने के लिए एक निर्देश प्रत्येक विद्यार्थी को तो दिया जाता था, साथ ही मानव मात्र को इनका पालन करना आवश्यक था।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा मन, वचन, कर्म में पवित्रता शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर

प्रणिधान। इन यम एवं नियमों की उपयोगिता, महत्व एवं अनिवार्यता के विषय में कुछ कहना उचित न होगा, वस्तुत: ये मानव को पूर्ण मानव बनाने के साधन थे। इनका आज के छात्र समाज में पूर्णत: अभाव सा ही दृष्टिगोचर हो रहा है।

प्राचीन काल की शिक्षा में मूल श्रद्धा की भावना थी किंतु आज के छात्र समाज में उसका पूर्णत: अभाव है वस्तुत: मानव जीवन की सफलता के लिए विभिन्न तत्वों में श्रद्धा का प्रधानतम स्थान है। श्रद्धा से समस्त कार्य अनायास ही संपन्न हो जाते हैं श्रद्धा की भावना अपने गुरुजनों को बस में करने का सर्व सुलभ साधन है। व्रत से दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा, श्रद्धा से सत्य। इस प्रकार क्रमश: मानव को सुपथ पर ले जाने के लिए यह एक पद्धति वेद में निर्दिष्ट है।

शिक्षा का पूर्ण विकास राष्ट्र की संस्कृति के आधार पर ही हो सकता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि में अपने देश के आदर्शों का वरदहस्त रहता है। जिस प्रकार एक पौधा अपने अनुकूल जलवायु पर एवं मिट्टी से पृथक हो, अन्य भूमि पर विकसित नहीं हो सकता है उसी प्रकार किसी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति अपनी संस्कृति की आधारशिला का परित्याग कर उन्नति नहीं कर सकती है। वैदिक काल की शिक्षा का पूर्ण विकास इसी पृष्ठभूमि पर हुआ है।

शिक्षा के आधुनिक संदर्भ में वैदिक शिक्षा कालीन सूत्रों की प्रासंगिकता आज और भी अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि आज की शिक्षा प्रणाली में केवल मात्र जीविकोपार्जन की दृष्टि को महत्व दिया जाने लगा है। शिक्षा का यथार्थ उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास की अवहेलना स्पष्ट परिलक्षित होती है। शिक्षा में नैतिकता का संपुट अवश्य दिया जाना चाहिए। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का संबंध और आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से ना रह कर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है जिसमें हृदय मन और आत्मा की अवेहलना है उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता, इन शब्दों पर सभी शिक्षाशास्त्रियों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

–शास्त्री सदन

(साभार: वैदिक सार्वदेशिक)

■■

जीवन उपयोगी संकलन

1. अधिकार की अपनी एक मर्यादा होती है, संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं।
2. तुम्हारे मार्ग में चाहे गुलाब के फूल आएँ चाहे काँटे, किन्तु निरन्तर चलते रहो। प्रगति जीवन का लक्षण है।
3. इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
4. जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है, पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना जरूरी हैं।

(साभार : 'शुद्धि समाचार')

वचनामृत

1. सब जगत की प्रतिष्ठा धर्म ही है धर्मात्मा का ही लोक में विश्वास होता है जितने उत्तम काम हैं वे सब धर्म में ही लिये जाते हैं।
2. शिक्षा देश और जाति का जीवन है शिक्षा से ही मानव और कुशिक्षा से दानव बन जाते हैं।
3. धन एक उपयोग की वस्तु है यह बड़े परिश्रम से प्राप्त होती है।

(साभार : 'आर्यावर्त केसरी, अमरोहा')

■■

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यंथापूर्वमंकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥ –ऋ० १०/१९०/३

सब जगत् को धारण तथा पोषण करने वाले परमात्मा ने जैसे पूर्व समय में सूर्य और चन्द्र रचे, वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं। ठीक उसी प्रकार द्युलोक, पृथिवीलोक, अन्तरिक्ष और आकाश में जितने लोक हैं उनका निर्माण भी पूर्वकल्प के अनुसार ही किया है।

सूचना

आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि दिनांक **28 अप्रैल, 2019 रविवार** से **प्रत्येक मास** के **अन्तिम रविवार** को **डॉ. (प्रो.) विनोद कुमार मलिक, महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के कमरा नं. 6 में प्रातः 10:15 से 10:45 बजे के बीच निःशुल्क परामर्श के लिए उपलब्ध रहेंगे।**

आपकी जानकारी के लिए डॉ. विनोद कुमार मलिक, सर गंगा राम अस्पताल, राजिंदर नगर, नई दिल्ली के Deptt. of Laparascopic & General Surgery के Co-Chairman & Head Surgery हैं।

सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे इस अवसर का लाभ अधिक से अधिक उठाएँ।

मई 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
05	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	आर्य समाज का राष्ट्रीय चिन्तन एवं वर्तमान राजनीति।
12	श्री देव आर्य (9210750329)	सुमधुर भजन
19	डॉ. महावीर मीमांसक (9811960640)	वेद और विज्ञान
26	आचार्य राजू वैज्ञानिक (9810716316)	सत्संग - क्यों और कैसे? (भाग-1)

अप्रैल मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती संतोष मुंजाल	36,000/-	श्री रमन मेहता	2,100/-	श्री विशाल भाटिया	1,100/-
श्रीमती रेणू मुंजाल	11,000/-	श्री विजय भाटिया	2,100/-	श्रीमती आर. कक्कर	1,100/-
श्रीमती गीतिका आनन्द	10,000/-	श्री सुनील एवं श्रीमती सरोज अबरोल	2,100/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-
श्री योगेश मुंजाल M/s मुंजाल शोवा लिमी.	7,200/-			श्रीमती प्रेम शर्मा	1,100/-
		श्रीमती रक्षा पुरी	2,100/-	श्री ऋषि राजपाल	1,100/-
श्री उषा मरवाह	7,000/-	श्री शादी लाल गेरा	2,100/-	श्रीमती वीना कश्यप	1,100/-
श्रीमती अमृत पॉल	5,200/-	श्रीमती सतीश सहाय	2,100/-	श्रीमती राजे बिदानी	1,100/-
श्री प्रेम कृष्ण बहल	5,100/-	श्रीमती उमा रस्तोगी	2,000/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री जुगल किशोर खन्ना	5,100/-	श्रीमती सुधा गर्ग	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्री योगराज अरोड़ा	5,100/-	श्रीमती राज कुमारी मलिक	1,500/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री मेघ श्याम वेदालंकार	5,000/-	श्री अंकुर एवं अक्षत गुलाटी	1,100/-	श्री अमर सिंह पहल	1,000/-
श्री अरुण बहल	5,000/-	श्री विजय लखनपाल	1,100/-	श्री सुख सागर ढींगरा	1,000/-
श्री अनिल बहल	5,000/-	कर्नल गोपाल वर्मा	1,100/-	श्रीमती अमला ठुकराल	1,000/-
डॉ. एस.एस. यादव	5,000/-	श्री महेश आर्य	1,100/-	श्री विजय मेहता	750/-
श्रीमती चन्द्रप्रभा खाण्डपुर	3,200/-	श्री डी.के. मग्गू	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्रीमती सुदर्शन बजाज	3,100/-	आर्य समाज गोविन्द पुरी	1,100/-	श्री कमलेश कुमार वोहरा	511/-
श्री राजीव कुमार चौधरी	3,100/-	श्री भारद्वाज परिवार	1,100/-	श्री धर्मपाल झा	500/-
श्री सुनील कुमार मेहता	3,100/-	श्री अभिषेक बहल	1,100/-	श्रीमती उषा मदान	500/-
श्री एस.सी. सक्सेना	3,100/-	श्री एस.सी. गर्ग	1,100/-	आर्य समाज मदनगीर	500/-
श्रीमती सुदेश चोपड़ा	3,100/-	श्री विजय ढल	1,100/-	श्रीमती शान्ता रेहानी	500/-
श्रीमती सुशील गुलाटी	2,200/-	श्रीमती दीपिका सहाय	1,100/-	श्री वीरेन्द्र कुमार सूद	500/-
श्री राजीव भटनागर	2,100/-	श्रीमती मंजू बहल	1,100/-	श्रीमती आभा गुप्ता	500/-
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	2,100/-	श्री आर.के. तनेजा	1,100/-	श्री जगदीश मेहतानी	500/-
दधीचि धाम समिति	2,100/-	श्री पवन शुक्ला	1,100/-	श्रीमती नीना पुरी	500/-
श्री अशोक चोपड़ा	2,100/-	श्रीमती राज रानी महाजन	1,100/-		

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

- ❖ श्रीमती राज कुमारी मलिक ₹ 1,00,000/-
- ❖ श्री ईश्वर दत्त कौशिक ₹ 10,000/-
- ❖ श्रीमती सावित्री शर्मा ₹ 10,000/-
- ❖ श्रीमती सरिता आलम C/o श्रीमती अमृत पॉल ₹ 7,000/-

अन्य दान: ❖ श्री कमल शर्मा - Medicines

वार्षिकोत्सव (15 अप्रैल 2019 से 21 अप्रैल 2019)

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रेटर कैलाश-1 आर्य समाज का वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। समाज के सभी अधिकारी व श्रोताओं ने बड़े उल्लासपूर्वक इन दिवसों का आनन्द लिया। **वार्षिकोत्सव 15 अप्रैल 2019 से 21 अप्रैल 2019** तक चला।

कार्यक्रम के ब्रह्मा श्री आचार्य अखिलेश्वर भारद्वाज जी रहे जिन्होंने प्रतिदिन यज्ञ का ब्रह्मत्व किया। प्रतिदिन प्रात: 7 से 8:30 बजे तक यज्ञ व प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के उपाचार्य श्री आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी रहे। प्रात:काल के प्रवचन में आचार्य अखिलेश्वर जी ने सामवेद के मंत्रों का सार बताया व कहानी के माध्यम से बड़े ही सुन्दर ढंग से समझाया।

रात्री के सत्र में सायम् 6:30 से 7:30 बजे तक भजन का कार्यक्रम रहा। जिसमें प्रथम तीन दिवस श्री अंकित उपाध्याय ने भजनों के माध्यम से सबको मंत्रमुग्ध किया। अन्तिम चार दिवस में श्री लक्ष्मीकान्त जी ने भजनों के द्वारा समा बांधा। दोनों ही गायकों ने अपनी सुरीली आवाज से सबका मन मोह लिया।

रात्रि 7:30 बजे से 8:30 बजे तक प्रतिदिन वेदकथा का आयोजन किया गया, कथा के वक्ता श्री आचार्य अखिलेश्वर जी रहे। आचार्य श्री ने बहुत ही मधुर सामवेद व भजनों द्वारा मंत्रों की व्याख्या की। आचार्य श्री ने हर दिन अलग विषय पर कथा की।

सामवेद के सभी विषयों का प्रवचन सभी ने बड़े आनन्द पूर्वक सुना। आचार्य श्री ने प्रवचनों के बीच-बीच में कहानियों तथा प्रेरणादायक विचारों के माध्यम से सबको सामवेद का सार व कथा सुनाया।

समापन दिवस के अवसर पर नवनिर्माणाधिन वैदिक सेन्टर के हॉल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माता सन्तोष मुंजाल जी के साथ श्री सुमन मुंजाल, श्री सुनील कान्त मुंजाल व मुंजाल परिवार के अन्य सदस्यों का आगमन हुआ। कार्यक्रम में आचार्य **अखिलेश्वर जी** का **'वैदिक शिक्षा ही मानवता का आधार'** विषय पर व **डॉ. महेश विद्यालंकार जी** का **'वेदों का सार'** विषय पर प्रवचन हुआ। स्वामी प्रणवानन्द जी, संचालक श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, न्यास ने अपने आशीर्वाद दिए। श्री सुनील कांत मुंजाल ने हीरो परिवार की तरफ से सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री अजय सहगल, अमिति स्कूल के निदेशक श्री आनन्द चौहान, सिलेक्ट सिटीवाक के निदेशक श्री योगराज अरोड़ा जी, दिल्ली सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री रजनीश गोयनका, शिक्षा निदेशालय के पूर्व अधिकारी श्री नरेन्द्र घई आदि अनेक गणमान्यजन ने समाज में पधार कर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। तत्पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया गया जो कि मुंजाल परिवार की तरफ से था। धन्यवाद के साथ कथा व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर (STUDENTS CHARITRA NIRMAN CAMP)
(13th May 2019 to 24th May 2019)

Amrit Paul Arya Shishu Shala under Arya Samaj Kailash-Greater Kailash-I is holding a Summer Camp for children between the ages of 5 years and 11 years from **Monday, 13th May, 2019** to **Friday, 24th May, 2019 (Saturday and Sunday being closed)**. The timings of the camp will be from **8:00 am to 11:00 am** every day. The main purpose of camp is Personality Development, Inculcating Sanskars (values), how to be healthy, happy, successful and imbibing various life skills.

Classes will be held in **Yoga, Meditation, Painting, Maps, Vocals Classical Music, Dance, Story telling, Story-reading, Debate, Craft, Traditional games like chess, Carromboard** and **Power-point** presentation etc.

Interested parents/students can register for the camp giving name, age, address and contact number along with photocopy of the school photo ID-Card of the child with **Surendra Pratap, Mobile No. 9953782813 or Mukesh Kumar, Mobile No. 9990067306** or can send by **email to samajarya@yahoo.in**. Admissions will be on first come first served basis.

We are also looking for Volunteers who can conduct the sessions on the above mentioned activities. They may send their names on the above mentioned contacts.

Mr. Rajender Kumar Verma and Mrs. Archana Vir respectively will be Convener and Co-Convener of the camp.

This Summer Camp is free of cost.

Vijay Lakhanpal
President

वार्षिकोत्सव - झलकियाँ

(15 अप्रैल 2019 से 21 अप्रैल 2019)

प्रवचन - आचार्य अखिलेश्वर जी

यज्ञ में उपस्थित सदस्यगण

श्रीमती संतोष मुंजाल जी का स्वागत करते हुए श्रीमती अमृत पॉल

मंच पर-आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुनील मुंजाल, श्रीमती संतोष मुंजाल, श्री सुमन कान्त मुंजाल, श्री राजीव चौधरी

स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल गौतम नगर का स्वागत करते हुए श्री विजय लखनपाल

आचार्य इन्द्र देव-शिक्षक सत्यार्थ प्रकाश एवं श्री राजीव चौधरी

श्री योगेश मुंजाल-संरक्षक, आर्य समाज एवं स्वामी प्रणवानन्द जी

मंच-आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री योगेश मुंजाल जी एवं श्रीमती संतोष मुंजाल जी

वार्षिकोत्सव - झलकियाँ

(15 अप्रैल 2019 से 21 अप्रैल 2019)

स्वामी प्रणवानन्द, आचार्य इन्द्रदेव सत्यार्थ प्रकाश कक्षा प्रमाण पत्र वितरण (श्रीमती चन्द्रकला पहल)

डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य इन्द्रदेव जी

आचार्य अखिलेश्वर जी का सम्मान करते हुए श्री योगेश मुंजाल जी

मंच पर - श्री आनन्द चौहान, श्री योगेश मुंजाल, श्रमीती संतोष मुंजाल, श्री सुमन कान्त मुंजाल, आ.अखिलेश्वर जी, श्री विजय लखनपाल, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री सुनील मुंजाल

संबोधित करते हुए श्री सुनील मुंजाल जी

मंच पर - डॉ. महेश विद्यालंकार, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य इन्द्रदेव, श्री अजय सहगल

मंच संचालित करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा जी

सभागार में उपस्थित अतिथिगण